

सत्र 9: व्यवस्थाविवरण 16-18

डॉ सिंथिया पार्कर

यह डॉ. सिंथिया पार्कर और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक पर उनका शिक्षण है। यह नेतृत्व पर सत्र 9, व्यवस्थाविवरण 16-18 है।

समीक्षा एवं परिचय

व्यवस्थाविवरण 16 में हमें जो दावत दी गई है उसके बारे में हम पहले ही बात कर चुके हैं। मुझे लगता है कि 16 के अंतिम छंद वास्तव में अध्याय 17 और 18 के साथ बहुत अच्छे लगते हैं क्योंकि वे इस बातचीत का हिस्सा हैं कि इस्राएली नेतृत्व कैसे स्थापित करते हैं एक बार जब वे जमीन में चले जाते हैं तो संरचना। मुझे यह हमेशा दिलचस्प लगता है कि नेतृत्व का विचार और नेतृत्व की एक प्रणाली स्थापित करने का विचार अब तक सामने नहीं आया है। तो, हमने पहले ही अध्याय 5 से 11 तक इस प्रेरक भाषण को देखा है और लोगों को उन विधियों और आज्ञाओं का पालन करने के लिए कहा है जो भगवान अपने लोगों को दे रहे हैं। हम अध्याय 12 में पहले ही देख चुके हैं कि ईश्वर ही वह है जो अपना नाम रखने के लिए जगह चुन रहा है, और यह लोगों के लिए पहचान के एक केंद्रीकृत स्रोत के रूप में कार्य करता है, भले ही वे देश में कहीं भी रहते हों।

और हम पहले ही देख चुके हैं कि कैसे लोगों को अपने बीच में जो कुछ भी है, घृणित चीजें या घृणित चीजें हैं, उन्हें मिटाने के लिए सावधानी बरतनी होगी, भले ही इसके लिए झूठे भविष्यवक्ता को मारना हो या किसी करीबी दोस्त या किसी को भी मारना हो। बेटा। प्राथमिकता यह होनी चाहिए कि ईश्वर ही एकमात्र ईश्वर है जिसकी पूजा की जाती है। हमने कोषेर कानूनों को देखा, और हमने सामाजिक नैतिकता के शुरुआती विचारों को देखा।

और उन सभी चीजों के बाद ही हम रुके और रुके और कहा कि जब आप एक समुदाय के रूप में भूमि पर जाते हैं, जैसे कि आप एक स्थान पर एक राष्ट्र का निर्माण करने की कोशिश

कर रहे हैं, तो आपको मदद के लिए नेताओं की एक प्रणाली की आवश्यकता होगी भूमि अच्छी तरह काम करती है।

तो, हम उन पर एक नज़र डालने जा रहे हैं। वे अध्याय 16 के अंत से शुरू होते हैं, लेकिन पढ़ना शुरू करने से पहले हम कुछ अलग चीजों को ध्यान में रखने की कोशिश करेंगे।

शहर के गेट और उसके चुने हुए स्थान में भगवान और नेताओं का शासन

तो, एक, नेतृत्व की यह पूरी प्रणाली ईश्वर के अधीन है या उसके शासन के अंतर्गत आती है। तो, यह भगवान की पसंद है। इस बात पर बहुत अधिक जोर है कि भगवान किसे चुन रहा है और वह उन्हें क्यों चुन रहा है। हम इस पर भी ध्यान देने जा रहे हैं क्योंकि हम पहले ही शहर के द्वारों और चुने गए स्थान के बारे में बात कर चुके हैं, हम इस बात पर भी ध्यान देने जा रहे हैं कि ये सभी अलग-अलग नेता कहाँ स्थित हैं। और शहर के फाटकों में स्थित नेताओं का एक संयोजन है, और नेताओं को चुने हुए स्थान पर स्थित किया जाता है। और यहां एक संबंध है, एक उतार-चढ़ाव है जो इन दोनों स्थानों के बीच चलता है। और यह सिर्फ उस स्थान की संरचना पर निर्माण है जिसे हमने पहले ही अध्याय 12 में शुरू और शुरू होते देखा है।

और फिर, हम इस पर ध्यान केंद्रित करने जा रहे हैं कि कैसे अध्याय 17 के उत्तरार्ध में, 17 से 18 तक, इन अध्यायों में उल्लिखित नेताओं का ध्यान भगवान की पसंद पर है। तो, फिर से, हमारे पास नेतृत्व की यह प्रणाली है जिसका निर्माण किया जा रहा है। यह ईश्वर की पसंद है, लेकिन एक तरह से, एक प्रकार का पुल बनाना और यह सुनिश्चित करना कि हम अभी भी भूमि पर अच्छी तरह से एक साथ रह रहे हैं।

पारस्परिक उत्तरदायित्व

तो, हम अध्याय 16 को देखना शुरू करने जा रहे हैं, और इससे पहले कि मैं पढ़ना शुरू करूँ, हम केंद्र और सभी विभिन्न शहर के द्वारों या वितरित स्थानों के बीच बदलाव को नोटिस करने जा रहे हैं, कैसे आपसी जिम्मेदारी पर जोर दिया जाता है। इसलिए, भले ही न्यायाधीशों और पुजारियों का उल्लेख उन लोगों के रूप में किया जा रहा है जो नेतृत्व के पदों को पूरा कर रहे हैं,

वहां एक पारस्परिक जिम्मेदारी है। नियमित लोग, शहर के फाटकों के अन्य लोग, अभी भी भाग लेते हैं।

न्याय और धार्मिकता

मैं यह भी चाहता हूँ कि हम इन बहन अवधारणाओं न्याय (मिशपत) और धार्मिकता (सेडेका) के बारे में सोचें, या कम से कम उनका उल्लेख करें। तो, न्याय और धार्मिकता, वे साथ-साथ चलते हैं। धार्मिकता का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है कि यह ईश्वर का चरित्र है। यह सीधा है. यह प्लम लाइन है. यह सीधा ऊपर और नीचे होता है। ईश्वर के बारे में हमेशा धर्मी होने की बात की जाती है। इसलिए, परमेश्वर अपने लोगों को जो कानून दे रहा है वह धार्मिक है। न्याय एक ऐसी चीज़ है जो घटित होती है। यदि यह धार्मिकता है, यदि यह ईश्वर का चरित्र है, यदि लोग लाइन से भटक जाते हैं और धार्मिकता के अनुरूप नहीं हैं, तो न्याय चीजों को वापस धार्मिकता में लाने का कार्य है। तो, न्याय यह कह रहा है कि यह व्यक्ति अपने दायरे से बाहर है, या यह संगठन अपने दायरे से बाहर है, और इसे वापस खींच रहा है ताकि लोग भगवान की धार्मिकता का प्रतिनिधित्व कर सकें।

व्यवस्थाविवरण 16:20: न्याय या धार्मिकता?

यह मेरे लिए दिलचस्प है क्योंकि मुझे लगता है कि अध्याय 16 की शुरुआत में ही हम श्लोक 20 को देखते हैं, और आपको इसे अपने अनुवाद में पढ़ना चाहिए। बाइबिल का मेरा अनुवाद कहता है, "न्याय और केवल न्याय, तुम इस बात का प्रयत्न करो कि तुम जीवित रहो और उस देश के अधिकारी हो जाओ जो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दिया है।"

मुझे आश्चर्य है कि आपका अनुवाद क्या कहता है। लगभग हर बार जब मेरी कक्षा होती है, और मेरे सामने एक छात्र बैठा होता है, तो लगभग हर अनुवाद में "न्याय" लिखा होता है। और यह अच्छा लगता है. यह सही शब्द लगता है क्योंकि हम न्याय का अनुसरण करना चाहते हैं, लोगों की मदद करना चाहते हैं और चीजों को भगवान के अनुसार धार्मिकता के अनुसार वापस लाना चाहते

हैं। सिवाय इसके कि जब हम हिब्रू और श्लोक 20 को देखते हैं, तो यह हिब्रू है, "सादेक सादेक," "धार्मिकता, धार्मिकता।" इसलिए, मेरे लिए यह उत्सुकता की बात है कि इसका हमेशा अंग्रेजी में अनुवाद किया जाता है, लगभग हमेशा अंग्रेजी में इसका अनुवाद "न्याय" के रूप में किया जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि न्याय कुछ ऐसा है जिसका आपको अनुसरण करना चाहिए, और यह कहता है कि "न्याय, न्याय" का अनुसरण करें जिसका आपको अनुसरण करना चाहिए। सिवाय इसके कि जोर वास्तव में धार्मिकता, भगवान के चरित्र पर है। इसलिए, जोर आवश्यक रूप से सभी को एक पंक्ति में लाकर कार्रवाई पर नहीं है, बल्कि भगवान की धार्मिकता का अनुसरण करने पर है। तुम्हें इसी का अनुसरण करना चाहिए ताकि तुम इस भूमि पर लंबे समय तक जीवित रह सको।

नेता: व्यवस्थाविवरण 16 - द्वारों में न्यायाधीश

ठीक है, तो चलिए वापस चलते हैं, और वास्तव में विभिन्न प्रकार के लोगों के बारे में जानते हैं जो विभिन्न प्रकार के नेताओं और नेतृत्व भूमिकाओं द्वारा सिखाए जाते हैं।

तो अध्याय 16 में, पहले प्रकार के लोगों के समूह के बारे में हम बात करते हैं जिनका उल्लेख किया गया है वे न्यायाधीश हैं। लेकिन फिर, हमारे पास नियमित नागरिक हैं जिनका उल्लेख किया गया है, और हमारे पास पुजारी हैं। और हम यह देखने जा रहे हैं कि ये गतिविधियाँ, नेतृत्व गतिविधियाँ, शहर के द्वारों और चुने हुए स्थान दोनों में होती हैं।

तो, मेरे साथ पढ़ें। हम अध्याय 16, श्लोक 18 से शुरू करने जा रहे हैं। "तू अपने सब नगरों में, अर्थात् अपने सब नगरों में अपने लिये न्यायी और सरदार नियुक्त करना।" हिब्रू में कहा गया है, "आपके सभी द्वारों में," और यह वास्तव में दर्शाता है कि समाज वास्तव में कैसे काम करता है। जब आपके पास बड़े शहर होते हैं, तो वे गेट परिसरों द्वारा संरक्षित होते हैं। ये गेट परिसर काफी बड़े थे, और गेट में बहुत सारी गतिविधियाँ होती थीं। यह द्वार हर राज्य का हृदय बन जाता है। यहीं पर सारी गपशप होती है। यह वह जगह है जहां लोग भोजन मांगते थे। यह वह जगह है जहां यदि आपके पास अतिरिक्त भोजन है, तो आप बेच सकते हैं। तो, शहर के फाटकों पर खरीदारी, बिक्री

और भीख माँगना होता है। हमारे पास ऐसे न्यायाधीश भी होंगे जो शहर के द्वारों पर बैठकर न्याय करेंगे।

इसलिये, तुम्हारे सब नगरों और फाटकों में, जिन्हें तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे गोत्रों के अनुसार तुम्हें देता है, न्यायी और हाकिम हैं, और वे धर्म से प्रजा का न्याय करेंगे। , और तुम रिश्वत न लेना। क्योंकि रिश्वत बुद्धिमानों की आँखें अन्धी कर देती है, और धर्मियों की बातें पलट देती है।

मेरे लिए यह दिलचस्प है. हम पहले ही आँखों और आँखों से दुनिया के बारे में आपकी धारणा के बारे में बात कर चुके हैं। लोगों को रिश्वत न लेने की बहुत सी बार-बार दी जाने वाली चेतावनियाँ दी जाती हैं क्योंकि इससे लोगों की आँखें अंधी हो जाती हैं।

हमारे पास एक बहुत ही दिलचस्प तरह का एक पहलू भी है, थोड़ा सा, यदि आप इसे ट्रेक करना चाहते हैं और बाइबिल के आख्यानो में यह कैसे चलता है, इसका अनुसरण करना चाहते हैं, तो हम पाते हैं कि कुछ नेताओं के साथ, जब बाइबिल नेताओं के बारे में और अंत की ओर बात करती है उनके शासन के बारे में बात की जाएगी कि वे स्पष्ट दृष्टि वाले हैं, फिर भी उनकी दृष्टि तेज है या नहीं। यह इसी के सन्दर्भ में हो सकता है, शायद नहीं भी। यह सिर्फ बुढ़ापा हो सकता है. लेकिन मुझे यह दिलचस्प लगता है जब बाइबिल के लेखक हमें यह बताने पर आमादा होते हैं कि उसकी आँखों की रोशनी कम हो गई है। और इसलिए, आप जानते हैं, मूसा की तरह, जब हम अध्याय 34 तक पहुंचते हैं, तो मूसा की दृष्टि अंत तक स्पष्ट थी। ठीक है, इसलिए रिश्वत मत लेना क्योंकि रिश्वत आँखें अंधी कर देगी।

व्यवस्थाविवरण 16:20 मूर्तिपूजा के विरुद्ध चेतावनी - सभी नागरिक जिम्मेदार

अब हमारे पास श्लोक 20 है, और मैं इसे उसी तरह पढ़ने जा रहा हूँ जैसे यह हिब्रू में "धार्मिकता, धार्मिकता" के साथ लिखा गया है। "तू इस बात का प्रयत्न करना कि तू जीवित रहे, और जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस पर अधिकार कर ले। तू अपने परमेश्वर यहोवा की जो वेदी अपने लिथे बनाएगा उसके पास किसी प्रकार के वृक्ष का अशेरा न लगाना। तुम अपने लिये कोई पवित्र स्तम्भ खड़ा न करना जिससे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा घृणा करता हो। तुम अपने

परमेश्वर यहोवा के लिये कोई बैल वा भेड़-बकरी बलि न करना, जिस में कोई दोष वा कोई दोष हो, क्योंकि वह तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लिये घृणित वस्तु है। . यदि आपके बीच में कोई पाया जाता है," तो, फिर से, अध्याय 13 की तरह, आप, नागरिक के रूप में, आपके बीच में जो कुछ भी है उसके लिए जिम्मेदार हैं। इसलिये यदि तुम अपने बीच में किसी नगर में, जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें देता है, कोई पुरुष वा स्त्री पाओ, जो अपने परमेश्वर यहोवा की वाचा को तोड़कर ऐसा काम करता हो, जो उसकी दृष्टि में बुरा है। और पराये देवताओं की उपासना की, और उनको या सूर्य, या चन्द्रमा, या किसी स्वर्गीय सेना को दण्डवत् किया, जिसकी आज्ञा मैं ने दी है। और यदि तुम से यह कहा जाए, और तुम सुन भी चुके हो, तो भली भांति जांच करना।

तो, आप कौन हैं? यह जरूरी नहीं कि नेता ही हों। यह जरूरी नहीं कि न्यायाधीश ही हों। यह आप हैं, नागरिक वर्ग। तो, हमारे पास न्यायाधीश हैं, जो शहर के फाटकों में इन मामलों को संभाल रहे हैं, लेकिन आप, नागरिक, आप में से प्रत्येक भी जिम्मेदार हैं। इसलिए, यदि आपने इसके बारे में सुना है, तो आपको यह जानने के लिए इसकी तलाश करनी होगी कि क्या यह सच है।

पद 5 में, "तब जिस पुरुष वा स्त्री ने यह बुरा काम किया है उस पुरुष वा स्त्री को अपने फाटक के बाहर ले आना, और उन को पथरवाह करके मार डालना। वह दो वा तीन गवाहों की गवाही पर जो मरना है, उसे मार डाला जाएगा। उसे किसी की गवाही पर मौत की सज़ा नहीं दी जाएगी।" इसलिए, कोई हेरफेर या व्यक्तिगत शिकायत नहीं है जिसे किसी के खिलाफ लाया जा सकता है, और यह दो या तीन या अधिक नागरिक हैं जो बाहर गए हैं जो बता सकते हैं, हां, यह व्यक्ति भगवान की वाचा के खिलाफ गया है। तुम उन्हें नगर द्वार पर ले जाओ। समझ यह है कि न्यायाधीश शहर के द्वार पर होगा। तो, आपके पास शहर का नेतृत्व और शहर के नागरिक हैं जो यह निर्णय ले रहे हैं।

आयत 7 में, "उसे मार डालने के लिये सबसे पहले गवाह का हाथ उसके विरुद्ध उठेगा, और उसके बाद लोगों का हाथ होगा। इस प्रकार, तू अपने बीच से बुराई को दूर कर देगा। यदि कोई मामला तुम्हारे लिए बहुत कठिन हो एक प्रकार की हत्या के बीच या एक प्रकार के मुकदमे

या दूसरे के बीच, एक प्रकार के हमले के बीच या दूसरे प्रकार के झगड़े के बीच, आपके न्यायालयों में या आपके द्वारों में विवाद के मामलों का फैसला करना, तो आप उठेंगे और उस स्थान पर जाएंगे जो आपका प्रभु है परमेश्वर ने चुना है। इसलिये, तुम लेवीय याजकों या उन दिनों के न्यायाधीश के पास आना।

शहर के द्वार और चुना हुआ स्थान

इसलिए, हम देख रहे हैं कि यहां शहर के द्वार और चुनी गई जगह एक-दूसरे के विरोध में नहीं हैं। यह चयनित स्थान के सर्वोच्च न्यायालय होने का मामला नहीं है। इसलिए, आप शहर के फाटकों पर अपना मुकदमा हार गए, और इसलिए आप चुने हुए स्थान पर अपील करते हैं। ऐसा बिलकुल नहीं है। यह इस बात से संबंधित है कि यदि कोई चीज़ बहुत जटिल है, यदि आपको कानून के बारे में अधिक विशिष्ट ज्ञान की आवश्यकता है, यदि कोई ऐसी चीज़ है जिसे आपके संदर्भ में समझना बहुत कठिन है, तो उस कठिन मामले को चुने हुए स्थान पर ले जाएं। और उस चुने हुए स्थान पर हमारे पास लेवी हैं क्योंकि वह उस स्थान पर काम करने के लिए उनकी विरासत है जिसे परमेश्वर ने चुना है। लेकिन हमारे पास जज भी हैं। और हमने नगर फाटकों पर न्यायाधीशों को भी देखा।

तो फिर, हम दोनों स्थानों के बीच यह संबंध देख रहे हैं। और जिस तरह आपके शहर के फाटकों में यह जांचना और सुनिश्चित करना वास्तव में महत्वपूर्ण था कि आपके बीच में, चुने हुए स्थान पर कोई घृणित काम तो नहीं हो रहा है, यह स्थान उस स्थान का प्रतिनिधित्व करता है जहां भगवान ने अपना नाम रखने के लिए चुना है, उस स्थान को भी बनाए रखना चाहिए पवित्रता का तत्व.

और इसलिए, आयत 9 में, यह कहा गया है, "इसलिए तुम लेवीय याजक के पास आओगे, या उन दिनों न्यायाधीश पद पर थे। तुम उनसे पूछताछ करो। वे तुम्हें मामले में फैसला सुनाएंगे।

तुम्हें ऐसा करना होगा।" जो न्याय वे तुम्हें उस स्थान से सुनाएं जिसे यहोवा चुन लेता है, उसके अनुसार तुम चौकसी करना, और जो कुछ वे तुम्हें सिखाएं, और जो व्यवस्था वे तुम्हें सिखाएं उसके अनुसार मानें। जो निर्णय वे तुम से कहें, वही तुम करना। जो वचन उन्होंने तुम से कहा है, उस से न तो दाहिनी ओर, न बाईं ओर मुड़ना। भगवान, न ही न्यायाधीश के लिए वह आदमी मर जाएगा। इस प्रकार, आप इस्राएल से बुराई को दूर कर देंगे।"

न्यायाधीश द्वार पर और लेवीय याजक चुने हुए स्थान पर

इसलिए शहर के फाटकों और चुने हुए स्थान पर क्या हो रहा है, इसके बारे में हमारे विचार बहुत समान हैं। लोगों के भीतर से ऐसे नेता होते हैं जो उठते हैं और शहर के फाटकों में न्यायाधीश बन जाते हैं। वहाँ लेवीय याजक हैं जिन्हें परमेश्वर ने पहले ही याजक बनने के लिए चुन लिया है। वे किसी भी प्रकार के अतिरिक्त जटिल विचार के लिए चुने गए स्थान पर कानून का प्रशासन कर रहे हैं। लेकिन धार्मिकता को दोनों जगहों पर बरकरार रखने की जरूरत है।

राजा

अब आइए राजा के बारे में सोचें। तो, यह व्यवस्थाविवरण में वास्तव में एक दिलचस्प हिस्सा है क्योंकि राजा के बारे में व्यवस्थाविवरण का संस्करण अन्य प्राचीन निकट पूर्वी राजाओं की तुलना में काफी अलग है। अतः अन्य प्राचीन निकट पूर्वी राजा, राजा स्वीकार्य सामाजिक व्यवहार की मानवीय शक्ति का प्रतीक थे। वह कानूनों के निर्माता थे। कुछ राजाओं ने स्वयं को अर्ध-दिव्य के रूप में स्थापित किया। उन्होंने अक्सर खुद को ऐसे लोगों के रूप में स्थापित किया, जिनके सत्ता में आते ही सब कुछ अव्यवस्थित और अराजकता में था, और वे ही थे जो समाज में व्यवस्था ला सकते थे, इसलिए कानून के निष्पादक, कानून के निर्माता, वही थे जो आवश्यक रूप से कानून के अधीन नहीं हैं। तो, राजा एक तरह से कानून से ऊपर और परे खड़ा है। और यह वास्तव में व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में हमें जो मिलता है उससे बिल्कुल अलग तस्वीर है।

भगवान की पसंद के रूप में राजा

इसलिए जब व्यवस्थाविवरण फिर से राजा के बारे में बात करता है, तो हम इस तथ्य पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि राजा को भगवान की पसंद का राजा माना जाता है। और हम फिर से इस तथ्य पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं कि राजा उनके भाइयों में से है। इसलिए कोई कानून स्थापित नहीं किया गया है ताकि राजा एक पदानुक्रमित हो, जहां एक राजा होता है जो पिता से पुत्र, पुत्र, पोते और परपोते तक जाता है। यह वह नहीं है। यह भाइयों में से भगवान की पसंद है।

राजा के लिए कानून, कॉन्ट्रा प्राचीन निकट ईस्टर किंग्स

तो, मैं अध्याय 17 में श्लोक 14 में पढ़ रहा हूँ। "जब तुम उस देश में प्रवेश करते हो, जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें देता है, और तुम उसके अधिकारनी हो कर उस में रहने लगते हो, और कहते हो, 'मैं अपने ऊपर एक राजा स्थापित करूंगा जैसा अन्य सभी राष्ट्र जो मेरे चारों ओर हैं।' और जिस को तेरा परमेश्वर यहोवा अपने भाइयों में से चुन ले, उसे अपने ऊपर राजा ठहराना, और अपने ऊपर राजा ठहराना; और जो परदेशी तेरे देश का न हो, उसे अपने ऊपर राजा न ठहराना। और वह बहुत न हो। अपने लिये घोड़े न बढ़ाए, और न वह लोगों को बहुत से घोड़े पाने के लिये मिस्र में लौटाए, क्योंकि यहोवा ने तुम से कहा है, कि तुम उस मार्ग से फिर कभी न लौटना। वह अपने लिए बहुत पत्नियों न रखे, नहीं तो उसका मन भटक जाएगा। अपने लिये चाँदी या सोना खूब बढ़ाओ।"

इसलिए, यदि हम फिर से रुकें, तो यह सब इस बात के विपरीत है कि प्राचीन निकट पूर्व ने राजाओं और राज्यों की स्थापना कैसे की। क्योंकि देश राजा का समर्थन करने के लिए वहां था, और राजा महाकाव्य, नेतृत्व का प्रतीक था। वह व्यापारिक सौदे भी कर सकता था। घोड़ों को इकट्ठा करना यह कहने का एक तरीका है कि आपका देश युद्ध के घोड़ों को इकट्ठा करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली है। घोड़ों का उपयोग युद्ध के लिए किया जाता था, शांति के लिए नहीं, कृषि के लिए नहीं। तो, घोड़ों को इकट्ठा करना स्टॉक जमा करने और युद्ध में जाने के लिए तैयार रहने का एक तरीका है।

करों को इकट्ठा करने, धन जमा करने और कई विवाह समझौते करने के समान, और यह सिर्फ अत्यधिक कामुक होने से कहीं आगे जाता है। यह राज्यों के बीच एक राजनीतिक समझौता

से कहीं अधिक है। इसलिए, जब एक राज्य और दूसरे राज्य ने एक राजनीतिक समझौता किया, तो ऐसी महिलाएं थीं जो एक घर से दूसरे घर में जाती थीं। वह विवाह अनुबंध राज्यों के बीच शांति का एक राजनीतिक अनुबंध था।

तो, भगवान कहते हैं, जब आप चारों ओर देखते हैं, तो आप इन सभी अन्य देशों को देखते हैं, और आप उनके जैसा बनना चाहते हैं। आप कर सकते हैं, लेकिन आप मेरे व्यक्ति को चुनेंगे, जिस व्यक्ति को मैं आपके ऊपर राजा बनने के लिए चुनूंगा, और वह व्यक्ति आपके आस-पास के सभी राजाओं की तरह जाकर ये सब काम नहीं कर सकता है।

और यह और भी आगे तक जाता है. तो, पद 18 में कहा गया है, "अब ऐसा होगा जब वह अपने राज्य के सिंहासन पर बैठेगा। वह इस कानून की एक प्रति लेवीय पुजारियों की उपस्थिति में एक पुस्तक पर लिखेगा। वह उसके पास रहेगी।, और वह अपने जीवन भर इसे पढ़ता रहे, जिस से वह इस व्यवस्था और विधियों के सब वचनों को ध्यान से मानकर अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना सीखे, ऐसा न हो कि उसका मन अपने देशवासियों के प्रति उदास न हो। आज्ञाओं से न तो दाहिनी ओर मुड़ें और न बाईं ओर, जिस से वह और उसके पुत्र इस्राएल के बीच में उसके राज्य में बहुत दिन तक जीवित रहें।

तो, एक बार फिर, हमारे पास यह पवित्रता है जो इज़राइल के बीच मौजूद होनी चाहिए। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि, अन्य प्राचीन निकट पूर्वी राजाओं के विपरीत, यह राजा कानून से ऊपर नहीं है। इस राजा को कानून की एक प्रति लिखनी है, कानून को अपने अंदर समाहित करने देना, उसके व्यवहार का तरीका, जिस तरह से वह अपने राज्य को ज्ञान के साथ चलाने जा रहा है, उसे लिखने का भौतिक कार्य भगवान के कानूनों से आता है उसने अपनी प्रजा दी है, राजा ने अपनी प्रजा नहीं दी है। तो, ईश्वर वह है जो अराजकता और अव्यवस्था की स्थिति को संभालता है और उसमें व्यवस्था लाता है, राजा नहीं।

तो, फिर से, राजा अधीन है, और राजा को अपने भाइयों से ऊपर उठना नहीं चाहिए, क्योंकि वह उसके भाइयों में से एक है।

अब, केवल जिज्ञासा से, और मेरे लिए क्योंकि मैं स्थान और स्थान के संगठन पर ध्यान देना पसंद करता हूँ, जब हमने पिछले नेतृत्व नियमों को देखा, तो हमने कहा कि न्यायाधीश शहर के द्वार में हैं। नगर द्वारों पर नागरिक सक्रिय हैं। याजक, लेवीय याजक, शहरों में रहते हैं, परन्तु उनका काम चुनी हुई जगह पर होता है, और हम न्यायाधीशों को चुनी हुई जगह पर पाते हैं। राजा कहाँ है? अध्याय 17 के इन श्लोकों में राजा को कोई विशिष्ट स्थान नहीं दिया गया है।

इसलिए, जैसे-जैसे इस्राएली भूमि में जाते हैं, और वे खुद को संगठित कर रहे हैं, और वे फिर से नैतिक व्यवहार सीख रहे हैं, राजा लगभग एक विचार है क्योंकि भगवान वास्तव में अपने लोगों पर राजा हैं। परमेश्वर वह है जो भूमि पर शासन करता है। वह वह व्यक्ति है जो अपने लोगों की देखभाल के लिए सभी को अपनी मेज पर आमंत्रित करता है। राजा को अपने आप को अपने देशवासियों से ऊँचा नहीं उठाना चाहिए। इस्राएली समाज के संगठन में राजा को कोई ऊँचा स्थान या केन्द्रीय स्थान नहीं दिया जाता।

अब, आप कह सकते हैं, उसे कानून लिखने और लेवीय याजकों की उपस्थिति में ऐसा करने की आवश्यकता है। तो, शायद इससे पता चलता है कि वह चुनी गई जगह के करीब है। शायद परन्तु लेवीय याजक कहीं भी रह सकते हैं। इसलिए, यह तय नहीं करता कि राजा केंद्र में है। मुझे यह वास्तव में दिलचस्प लगता है क्योंकि यह फिर से हमें व्यवस्थाविवरण की प्राथमिकताओं को दिखा रहा है। प्राथमिकता यह है कि ईश्वर ही प्रभारी है, और हर कोई उसकी धार्मिकता को आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहा है। और एक राजा को शीर्ष पर, शीर्ष पर एक व्यक्ति होने की कल्पित भूमिका से बाहर कर दिया गया है, और राजा को हटाकर सभी भाइयों के बीच भी राजा को रखा जा रहा है।

व्यवस्थाविवरण 18

तो अब, जैसे ही हम अध्याय 18 में आगे बढ़ते हैं, हम लेवियों को देखेंगे। और एक बार फिर, लेवियों के साथ, हम चुने हुए स्थान और शहर के फाटकों के बीच आगे-पीछे आंदोलन करने जा रहे हैं।

इसलिए, अध्याय 18 और श्लोक 1 में, यह कहा गया है, "लेवीय याजकों, लेवी के पूरे गोत्र का इस्राएल के साथ कोई हिस्सा या विरासत नहीं होगा।" दूसरे शब्दों में, उन्हें ज़मीन की वह विरासत नहीं मिलती जो अन्य लोगों को मिलती है। "वे यहोवा का हव्य और उसका भाग खाएंगे। उन्हें अपने देशवासियों के बीच में कोई भाग न मिले। यहोवा ही उनका भाग है, जैसा उस ने उन से वचन दिया है। अब यह याजकों का उन लोगों में से हक़ होगा जो भेंट चढ़ाते हैं। या तो एक बैल या भेड़ का बलिदान करो, जिसे वे याजक को दें, कन्धा, दोनों गाल, और पेट। तू अपना अन्न, अपना नया दाखमधु, और अपना तेल, और पहिला फल उसी को देना। अपनी भेड़-बकरियों का ऊन कतरना। क्योंकि यहोवा, तेरे परमेश्वर ने उसे और उसके पुत्रों को तुम्हारे सब गोत्रों में से चुन लिया है, कि खड़े होकर यहोवा के नाम पर सर्वदा सेवा करते रहें। अब, यदि कोई लेवी इस्राएल भर में तुम्हारे किसी नगर से आए, जहां वह रहता है, और जब चाहे उस स्यान पर जो यहोवा चुन लेता है आता है, तब वह अपने परमेश्वर यहोवा के नाम से सेवा किया करे, और अपने सब संगी लेवियोंकी नाई वहां यहोवा के साम्हने खड़ा रहे। उनके पिता की संपत्ति की बिक्री से।"

तो, हम वहीं रुकने जा रहे हैं। फिर, काफी दिलचस्प बात यह है कि हमें लेवियों की कुछ और विशिष्टताओं से परिचित कराया गया है। वे अपने भाइयों के बीच रहते हैं, लेकिन उनके पास संपत्ति नहीं है। और क्यों नहीं? खैर, परमेश्वर ने पूरे इस्राएल को भूमि दी है। यह भूमि इस्राएल की विरासत है। परन्तु लेवियों को चुने हुए स्थान पर यहोवा के साम्हने सेवा करने का आनन्द, और विशेषाधिकार, विरासत में दिया गया है। इसलिए, लेवियों को वास्तव में शेष इस्राएल के लिए उदाहरण के रूप में स्थापित किया गया है कि उन्हें कैसे व्यवहार करना चाहिए। वे एक तरह से पुजारियों का देश हैं। माना जाता है कि वे सभी, लेवी, परमेश्वर की धार्मिकता को प्रतिबिंबित कर रहे हैं; चुने हुए स्थान पर मंत्री बनने में सक्षम होना उनकी विरासत है।

तो, हमें क्या पता चलता है कि लेवी कब समृद्ध होंगे? जब शेष इस्राएल के सब लोग समृद्ध हुए, तो लेवियों ने क्या खाया? इस्राएलियों की उदारता ने चीज़ों को यहोवा के सामने ला दिया। इस प्रकार, बलिदान का भाग लेवियों को मिलता है। तो, लेवी जो प्रभु के सामने सेवा कर रहे थे, वे तब समृद्ध होते हैं जब इस्राएल के सभी लोग समृद्ध होते हैं। सब कुछ ठीक है जब हर कोई अपनी

भूमिका निभा रहा है जब बाकी इस्राएली उन उपहारों को ला रहे हैं जिन्हें उन्हें चुने हुए स्थान पर लाना चाहिए। चुने हुए स्थान पर, सभी लेवी समान रूप से एक साथ भोजन करते हैं और समान भाग बाँटते हैं।

तो फिर, हम शहर के फाटकों और चुने हुए स्थान के बीच आगे-पीछे होते रहते हैं।

इस्राएलियों और भविष्यवक्ताओं को कैसे कार्य नहीं करना चाहिए

तो, शेष 18 में, हमारे पास कुछ छंद हैं जो इस बारे में बात करते हैं कि इस्राएलियों को कैसे कार्य नहीं करना चाहिए। इसलिए, वे अन्य राज्यों के काम करने के तरीकों के अनुसार कार्य नहीं करते हैं। तो, अन्य राज्यों में भी भविष्यवक्ता हैं, लेकिन उनके पास ऐसे भविष्यवक्ता हैं जो एक विशेष तरीके से व्यवहार करते हैं - इसलिए जादू को देवताओं से संवाद करने और संलग्न करने की कोशिश करने और फिर लोगों को उन संदेशों को देने का एक तरीका है।

तो, अध्याय 18 में श्लोक 10 में, यह शुरू होता है, "तुम्हारे बीच कोई भी ऐसा नहीं होगा जो अपने बेटे या अपनी बेटी को आग में चढ़ाता हो, जो भविष्यवाणी करता हो, जो जादू टोना करता हो, या जो शकुन का अर्थ बताता हो, या एक जादूगर" और यह चलता रहता है। "जो जादू करता है।"

दूसरे शब्दों में, पैगम्बर की यह भूमिका अन्य देशों के पैगम्बरों की तरह नहीं दिखनी चाहिए। यह कुछ-कुछ वैसा ही है जैसे हमारे यहां राजा का यह नियम अन्य देशों के राजाओं के शासन जैसा नहीं दिखना चाहिए। वास्तव में एक नबी होगा, लेकिन यह ईश्वर की पसंद पर निर्भर करता है, लोगों पर नहीं।

मूसा जैसा पैगम्बर

आयत 15 में, यह कहा गया है, "तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे लिये तुम्हारे देशवासियों में से मेरे समान एक भविष्यद्वक्ता को खड़ा करेगा। तुम उसकी सुनोगे। यह उन सब बातों के अनुसार है जो तुमने अपने परमेश्वर यहोवा से मांगी थीं।" सभा के दिन होरेब ने कहा, मुझे अपने परमेश्वर यहोवा का शब्द फिर न सुनना, और वह बड़ी आग मुझे फिर न देखनी पड़े, नहीं तो मैं मर

जाऊंगा। यहोवा ने मुझ से कहा, 'उन्होंने अच्छा कहा है। मैं उनके देशवासियों में से तुम्हारे समान एक भविष्यवक्ता खड़ा करूंगा,' मूसा के बारे में बोलते हुए। "और मैं अपने वचन उसके मुंह में डालूंगा, और जो कुछ मैं आज्ञा दूं वह उन से सब कुछ कहेगा। ऐसा होगा कि जो कोई मेरी बातें न सुनेगा, जो वह मेरे नाम से कहेगा, उस से मैं आप ही बदला लूंगा। उसे। परन्तु जो भविष्यवक्ता मेरे नाम से अभिमान करके कोई ऐसी बात कहे, जिसे बोलने की आज्ञा मैं ने उसे न दी हो, या पराये देवताओं के नाम से कुछ कहे, वह भविष्यवक्ता मार डाला जाए।' तुम अपने मन में कहोगे, 'यहोवा ने जो वचन कहा है, उसे हम कैसे जान सकेंगे?' जब कोई भविष्यवक्ता प्रभु के नाम से बोलता है, यदि वह बात पूरी नहीं होती और न ही पूरी होती है, तो यह वह बात है जो प्रभु ने नहीं कही है। भविष्यवक्ता ने अभिमानपूर्वक यह बात कही है। तुम्हें उससे डरना नहीं चाहिए।"

और इसलिए हमारे पास ईश्वर द्वारा चुना गया एक पैगम्बर है, और फिर हमारे पास एक व्यक्ति है जो लोगों में से है, लोगों के बीच है, जिसे ईश्वर द्वारा चुना गया है और लोगों से बात करने और ईश्वर का प्रतिनिधित्व करने के लिए कहा गया है। उस पैगम्बर को अन्य देशों के पैगम्बर से अलग होना चाहिए और अलग दिखना चाहिए।

मूसा और यीशु जैसे पैगंबर

अब इससे पहले कि हम इस नेतृत्व खंड, एक भविष्यवक्ता के इस विचार, और श्लोक 15 और श्लोक 18 में बाँधें, मैं बस थोड़ा हटकर कहूंगा। इसमें कहा गया है, "मैं उनके देशवासियों के बीच से एक भविष्यवक्ता को खड़ा करूंगा जैसे आप," मूसा की तरह। यह विचार कि मूसा, मूसा को इस्राएलियों द्वारा एक महान और धर्मी भविष्यवक्ता, सर्वश्रेष्ठ भविष्यवक्ताओं में से एक, के रूप में याद किया जाता था। वह वही है जो होरेब तक गया था। वह वही है जिसने कानून प्राप्त किया है। उन्होंने ही लोगों को कानून समझाया। और इन छंदों को देखकर, लोगों ने हमेशा सोचा कि एक भविष्यवक्ता होगा जिसे भगवान अपने लोगों से बात करने के लिए चुनेंगे।

पुराने नियम में हमारे पास कई भविष्यवक्ता हैं, और जैसे-जैसे हम अंतर-विधान काल से आगे बढ़ते हैं; इसलिए, इस बार पुराने और नए नियम के बीच, लोग मसीहा के बारे में विचार विकसित कर रहे हैं, एक मसीहा के बारे में जो आ रहा है, और यहूदी भूमि पर लौट रहे हैं, लेकिन

वे अभी भी दूसरे राज्य के शासन के अधीन हैं। यहूदी इस बारे में बात करने लगते हैं कि ईश्वर अभी भी मूसा जैसा भविष्यवक्ता भेजने वाला है, जो कानून की व्याख्या कर सकता है, और जो उसकी ओर से ईश्वर के शब्द बोलेगा।

जब आप सुसमाचार की कहानियाँ पढ़ते हैं, तो कभी-कभी, जब यीशु शिष्यों से बात करते हैं, तो वह शिष्यों से पूछते हैं, "लोग क्या कहते हैं कि मैं कौन हूँ।" और लोग कह रहे थे, 'ठीक है, कुछ लोग कहते हैं कि आप एलियाह हैं, कुछ कहते हैं कि आप यिर्मयाह या भविष्यवक्ताओं में से एक हैं, कुछ लोग कहते हैं कि आप भविष्यवक्ता हैं।" यह इस भविष्यवक्ता का विचार है कि व्यवस्थाविवरण कहता है कि ऐसा होगा परमेश्वर एक भविष्यवक्ता को खड़ा करेगा और उस भविष्यवक्ता के मुँह में अपने शब्द डालेगा।

खैर, मैथ्यू का सुसमाचार, मैथ्यू एक बहुत ही यहूदी दर्शकों के लिए लिखता है, और मैथ्यू का सुसमाचार, वास्तव में, व्यवस्थाविवरण की पुस्तक से बहुत मजबूती से जुड़ा हुआ है। सुसमाचार के संगठन तक, यह व्यवस्थाविवरण के संगठन के बहुत समान है।

मैथ्यू 5 में, सुसमाचार लेखक कहता है, "यीशु एक पहाड़ पर जाता है, बैठ जाता है, और लोगों को ये शब्द समझाने लगता है।" व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में मूसा ने जो कुछ किया है, यह उसकी बहुत ही हल्की और सौम्य प्रतिध्वनि है। तो जैसे मूसा सिनाई तक गया और कानून प्राप्त किया और फिर आकर लोगों को समझाया। इसी प्रकार, यीशु भी एक पहाड़ पर जाते हैं, लोगों को अपने साथ लाते हैं, बैठते हैं, और कानून समझाते हैं। यह एक दिलचस्प और सोचने लायक बात है।

नेतृत्व और इज़राइली समुदाय पर सारांश/निष्कर्ष

तो बस कुछ ठीले सिरों को जोड़ने के लिए, कुछ सामान्य विचारों के बारे में जो हमने यहां न्यायाधीशों, राजा, लेवियों और भविष्यवक्ताओं के साथ नेतृत्व के बारे में सीखा है। प्रत्येक नेता समुदाय का सदस्य है। इसलिए नेतृत्व की ऐसी तस्वीर के बजाय जो शीर्ष पर राजा के साथ एक त्रिकोण की तरह दिखती है। इसके बजाय, हमारे पास एक ऐसे समुदाय की तस्वीर है जिसके

समुदाय के भीतर से ही स्तंभ खड़े हैं। उनमें से कोई भी अन्य सभी से ऊपर नहीं है। ऐसा कोई राजा नहीं है जो शक्ति त्रिकोण के शीर्ष पर शिखर पर हो। ऐसा बिल्कुल नहीं है। इसलिए, नेता लोगों के लिए उदाहरण हैं कि सभी लोगों को क्या करना चाहिए। यहाँ तक कि राजा, वह भाइयों में से है, वह कानून के अधीन है, जैसे बाकी इस्राएली कानून के अधीन हैं। इसलिए, नेता उन अनेक लोगों में से एक हैं जो बाकी लोगों का उसी तरह प्रतिनिधित्व करते हैं जिस तरह से हर किसी को कार्य करना चाहिए। ऐसा माना जाता है कि वे सभी धार्मिकता का अनुसरण कर रहे हैं। ऐसा माना जाता है कि वे सभी सही तरीके से न्याय कर रहे हैं और सभी परमेश्वर की आवाज़ की तलाश कर रहे हैं।

और हमने देखा कि समुदाय निष्क्रिय नहीं है। इसलिए, इस खंड में भी, जहां हम नेतृत्व के बारे में विशेष रूप से बात कर रहे थे, हम कैसे व्यवस्था बनाए रख रहे हैं, और हम विवादों को कैसे संभाल रहे हैं, समुदाय सक्रिय रूप से शामिल हैं। इसलिए, नेतृत्व और अधिकार अन्य लोगों को नहीं दिया जाता है। उन लोगों को इसे संभालने दीजिए। यह वे हम में से एक हैं, वे नेता हम में से एक हैं, लेकिन मैं स्वयं अभी भी भाग लेने के लिए जिम्मेदार हूँ।

तो, यह शास्त्रीय पदानुक्रम प्रणाली का बिल्कुल वैकल्पिक दृष्टिकोण है। और यह उत्पीड़न और सत्ता के दुरुपयोग के खिलाफ काफी कठोर आलोचना प्रस्तुत करता है। तो, हम फिर से देखते हैं, और यद्यपि इस अध्याय में इसे दोहराया नहीं गया है, लेकिन हम एक बार फिर देखते हैं कि ईश्वर ही वह है जो अपने लोगों को मिस्र से बाहर लाया है और उन्हें वह स्थान दे रहा है जिसमें उन्हें रहना है। यह उन्हें इस तरह से एक स्थापित क्रम में जाने के लिए कह रहा है क्योंकि यही वह क्रम है जो मुझे प्रसन्न करता है। यह मिस्र की भूमि की तरह नहीं है। मिस्र दासत्व का घर, और अत्याचार की धधकती भट्टी था। मिस्र ने फिरौन की सेवा की। जब आप अंदर जाएं, तो नेतृत्व की न्याय की इस प्रकार की प्रणालियां स्थापित न करें। आप अंदर जाते हैं, और आप अपने समुदाय के स्तंभ स्थापित करते हैं जो हर किसी के लिए उदाहरण बन सकते हैं कि बाकी सभी को भी कैसे कार्य करना चाहिए। और हर कोई शामिल है।

यह डॉ. सिंधिया पार्कर और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक पर उनका शिक्षण है। यह नेतृत्व पर सत्र 9, व्यवस्थाविवरण 16-18 है।